Topic 17

भ्वादिगण इगुपध धातु

पुगन्तलघूपधस्य ।

पुगन्तस्य लघूपधस्य चाङ्गस्येकः गुणः सार्वधातुकार्धधातुकयोः धात्वादेः षः सः । सेधति । षत्वम् - सिषेध

सार्वधातुक और आर्धधातुक प्रत्यय पर होने पर पुगन्त और लघूपध अङ्ग के इक् के स्थान में गुण आदेश होता है। उदाहरण के लिए 'सिध्' धातु से लट् लकार के प्रथम-एकवचन में तिप् तथा शप् होकर 'सिध् अ ति' रूप बनता है। यहाँ 'सिध्' अंग की उपधा -इकार लघु है, अतः प्रकृत सूत्र से उसके स्थान पर गुण -एकार होकर 'सेधति' रूप सिद्ध होता है।

असंयोगाल्लिट् कित् ।

असंयोगात् परोऽपित् लिट्-कित् स्यात् । सिषिधतुः, सिषिधुः । सिषेधिथ, सिषिधथुः, सिषिध । सिषेध, सिषिधिव, सिषिधिम । सेधिता । सेधिष्यति । सेधतु । असेधत् । सेधेत् । सिध्यात् । असेधीत् । असेधिष्यत् । एवम् - चिती संज्ञाने । 1 । शुच शोके । 4 । शद् अवसादने वा । 1 । गदि ।

असंयोग से परे अपित् लिट् कित् होता है। णल्, थल्, और णल् को छोड़कर शेष लिडादेश अपित् है। अतः सब प्रकृत सूत्र से कित् हो जाते हैं। कित् हो जाने पर क्ङिति च से गुण-निषेध हो।